❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 जुलाई, 2017 से रविवार 30 जुलाई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

अलग झण्डे का राग : देश की अखण्डता पर चोट

कर्नाटक राज्य के लिए अलग झंडा बनाने की तैयारी कर रही कर्नाटक सरकार को गृह मंत्रालय से बड़ा झटका लगा है। गृह मंत्रालय ने अलग झंडे के प्रस्ताव को खारिज करते हुए कहा कि संविधान में फ्लैग कोड के तहत देश में एक झंडे को ही मंजूरी दी गई है। इसलिए देश का एक ही झंडा होगा।

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है। यही उसकी स्वतंत्रता का प्रतीक होता है। हमारी स्वतंत्रता हमारा संविधान किसी एक क्रांति का परिणाम नहीं है। यह कई सौ वर्षों के प्रयासों का फल है कि आज हम एक देश के तौर पर दुनिया के सामने गणतन्त्र के रूप में खड़े हैं। इसके लिए अनेक प्रकार से प्रयास किए गए। इनमें असंख्य लोगों की भागीदारी थी। कुछ शस्त्रधारी थे और कुछ अहिंसक। स्वतंत्रता के लिए समर्पित अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं के सामूहिक प्रयत्नों का फल हमारा संविधान, हमारा एक राष्ट्रध्वज और एक राष्ट्रगान है जोकि हमें विश्व के एक सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में स्थापित करता है।

भले ही लोग इस घटनाक्रम को राजनीति से प्रेरित मानकर देश की अखंडता के खिलाफ न समझकर और कर्नाटक कांग्रेस के अपने अलग क्षेत्रीय झंडे के प्रस्ताव को अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों की जमीन तैयार करने की कोशिश के तौर पर देख रहे हों लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि ब्रिटिश शासन से लम्बी लड़ाई के बाद हमने यह गौरव प्राप्त किया है।

यह प्रस्ताव फिलहाल शुरुआती स्तर पर ही है। अलग ध्वज के लिए याचिकाकर्ताओं के एक समूह के सवालों के जवाब में राज्य सरकार ने राज्य के लिए कानूनी तौर पर मान्य झंडे का डिजाइन तैयार करने के लिए अधिकारियों की एक समिति तैयार की थी। दिलचस्प बात यह है कि याचिका 2008-09 के बीच उस वक्त दायर की गई थी जब कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। उस वक्त भाजपा सरकार ने कर्नाटक हाई कोर्ट को बताया था कि राज्य का अलग झंडा होना देश की एकता और अखंडता के खिलाफ है। लेकिन उससे भी बड़ा सवाल यह है कि सरदार पटेल और नेहरू को आदर्श मानने वाली पार्टी भूतकाल से कोई सबक नहीं लेना चाह रही है।

लगभग 564 छोटी बड़ी देशी रियासतों के अलग-अलग झंडों के नीचे हमने अपना इतिहास पढ़ा। आज हमारे पास हमारी एक राष्ट्रीय पहचान तिरंगा है। भारत में किसी राज्य के पास अपना झंडा नहीं है पर जम्मू-कश्मीर के पास अपना अलग झंडा है। क्या वह दंश देश के लिए कम है जो अब कर्नाटक भी इस तरह की मांग पर उतर आया। यदि कोई एक अपराध करता है और उसे देखकर सब अपराध करने लगे तो फिर अपराध की परिभाषा ही बदल जाएगी!

भले ही कुछेक राजनेता कह रहे हों कि इसका सियासत से कोई लेना देना नहीं है। लेकिन, देश की दोनों ही बड़ी पार्टी के राजनीतिक कार्यकर्ता एक अजीब मुस्कान के साथ इस दलील को खारिज करते दिखते हैं। कारण आने वाले चुनाव में दोनों ही पार्टियाँ इस मुद्दे से

- *शेष पृष्ठ 8 पर*

....जम्मू-कश्मीर को राज्य के संविधान की धारा 370 के तहत अलग झंडा रखने का अधिकार प्राप्त है। जम्मू-कश्मीर को धारा 370 में विशेष अधिकार देने से देश को कितनी क्षति हुई है, यहां उसे बताने की जरूरत नहीं है। यूएई दूतावास में सूचनाधिकारी रहे हैं विवेक शुक्ला कहते हैं कि अलग झंडा और संविधान देने के चलते ही वहां पर भारत से बाहर जाने की मानसिकता पैदा हुई। ये तो देश के जनमानस का संकल्प है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट अंग बना हुआ है पर वस्तुतः स्थिति ये है कि राज्य की जनता भारत से अपने को जोड़ कर नहीं देखती। उसका संघीय व्यवस्था में कतई विश्वास नहीं है। वह भारत के धर्मनिरपेक्ष संविधान को ठेंगा दिखाती है और कश्मीर घाटी में इस्लामिक शासन व्यवस्था लागू करना चाहती है।......

भारत गणराज्य के
14वें राष्ट्रपति बनने पर
महामहिम श्री रामनाथ कोविन्द जी
को आर्यसमाज की ओर से
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नव निर्वाचित महामहिम राष्ट्रपति जी को आर्यसमाज की एतिहासिक पुस्तक प्रदान करते आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य।

दिल्ली स्थित समस्त आर्य विद्यालयों का सामूहिक विचारोत्सव एवं वार्षिकोत्सव

'आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर' सम्पन्न

देखें कार्यक्रम प्रसारण : आस्था टीवी – 6 अगस्त 1-3 बजे

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
6-7-8 अक्तूबर 2017
म्यांमा
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

6-7-8 अक्तूबर, 2017 : श्री अम्बिका मन्दिर परिसर, मांडले

आर्यजन भारी संख्या में भाग लें : भारतीय आर्यजनों के लिए विशेष यात्रा व्यवस्था

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रत्येक आर्य महानुभाव को सार्वदेशिक सभा से पंजीकरण अवश्य करवाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी विस्तृत यात्रा विवरण पृष्ठ 4 एवं 7 पर। यात्रा विवरण सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड भी किया जा सकता है।

वेद-स्वाध्याय

हे सोम! अपना अमृत बरसाओ

अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम।। -ऋ. 9/96/4
ऋषिः प्रतर्दनी दैवोदासिः।। देवता - पवमानः सोमः।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - पवमान सोम= हे क्षरित होने वाले सोम! **अजीतये** = हमारे अजित होने के लिए **अहतये** = हमारे अहत रहने के लिए **स्वस्तये** = हमारे कल्याण के लिए तथा **बृहते सर्वतातये** = इस महान् संसार की सर्वविध सर्वोन्नति व सर्वोदय के लिए **पवस्व** = तुम क्षरित होओ। **तत्** = इसे ही **इमे विश्वे सखायः** = ये सब मनुष्यसाथी **उशन्ति** = चाह रहे हैं, मांग रहे हैं और **तत्** = इसे ही **अहम्** = मैं **वश्मि** = चाह रहा हूं-इसके लिए व्याकुल हो रहा हूं।

विनय - हम चाहते हैं कि हम अजित रहें, कभी हार न जाएं, हम अहत रहें, कभी मारे न जाएं, हमारा कल्याण ही हो, कभी हमारा कोई अकल्याण न हो, परन्तु इस सबके लिए, हे सोम! हम तुम्हारे रस के भिक्षुक हैं। तुम्हारा रस मिल जाए तो और सब-कुछ हमें स्वयमेव मिल जाए। जैसे ग्रीष्म के बाद मेघवृष्टि उद्यान व खेत की सब वृक्ष-वनस्पतियों को जिस समय सजीव करती है तो उनमें सरसता, उनमें हरियाली, उनमें नवपल्लवों का फूटना, उनमें पुष्प और फल का आना आदि सब-कुछ उस एक वर्षारस के पा जाने से हो जाता है, उसी प्रकार यह संसाररूपी महा उद्यान भी, हे बरसनेवाले सोम! तुम्हारा रस पाकर ही नाना प्रकार से फूलता-फलता और जीवित रहा करता है। इस संसारोद्यान का प्रत्येक जीवरूपी वृक्ष तुमसे जीवन पाकर ही नाना प्रकार से आत्म-विकास पा रहा है। हम किसी भी प्रकार की उन्नति चाहें, किसी भी दिशा में आत्म विकास पाना चाहें, सदा हमें जिस एक वस्तु की आवश्यकता है, वह है तुमसे मिलने वाला जीवन-रस, सोम-रस। इसलिए, हे पवमान सोम! संसार के ये सब मनुष्य-मेरे साथी तुमसे यह जीवन-रस मांग रहे हैं-तुमसे यही चाह रहे हैं। मैं तुमसे इसी की मांग मचा रहा हूं। तो हे सोम! अब तुम मेरे लिए क्षरित होओ-मेरे इन सब मनुष्य-सखाओं के लिए क्षरित होओ, हमारी अजीति, अहति, स्वस्ति आदि सब कामनाओं को पूरा कर डालने के लिए क्षरित होओ। नहीं-नहीं, तुम तो हे अमृत बरसानेवाले! इस सब चर, अचर, बृहत् संसार के लिए ही अपनी अमृत-वर्षा का दान करो। ऐसा बरसो कि तुम्हारे अमृत से सींचे जाते हुए इस विशाल ब्रह्माण्ड में सब जीवों, सब प्राणियों की सदा ठीक प्रकार से सर्वविध सर्वोन्नति व सर्वोदय होता जाए। इस प्रकार सब जगत् और प्राणिमात्र का अमृत-सिंचन करते हुए ही तुम मुझे, इस अपने एक तुच्छ प्राणी को भी अपना यह अमृत-रस प्रदान करो। तनिक देखो, यह सब संसार इस अमृत-रस को पाने के लिए कैसा व्याकुल हो रहा है! मैं इसके लिए कैसा तड़प रहा हूं!

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

क्या मुझे इस परम्परा से छुटकारा पा लेना चाहिए?

.....शादी-विवाह, जन्म-मरण इस सबमें धर्म का किरदार सबसे अहम माना जाता रहा है। संस्कृति और परम्पराओं का उपयोग और दोहन भी धार्मिकता से परे हटकर नहीं देखा जा सकता। लेकिन इसके बावजूद 21 वीं सदी सूचना के तमाम माध्यमों के बीच आज इस्लाम के अन्दर से भी धार्मिक नवजागरण की आवाज दबे स्वर में ही सही पर आने लगी है। एक ऐसी पाकिस्तानी लड़की जिसका जन्म ब्रिटेन में हुआ है जो अपनी शादी को लेकर असमंजस में है और वह इस सवाल से जूझ रही है, वह कहती है मैं जानना चाहती हूं कि क्या चचेरे भाई से शादी करनी चाहिए और क्या रिश्ते में भाई-बहनों के बीच शादी एक सही फैसला होता है? .....

शादी-विवाह, जन्म-मरण इस सबमें धर्म का किरदार सबसे अहम माना जाता रहा है। संस्कृति और परम्पराओं का उपयोग और दोहन भी धार्मिकता से परे हटकर नहीं देखा जा सकता। लेकिन इसके बावजूद 21 वीं सदी सूचना के तमाम माध्यमों के बीच आज इस्लाम के अन्दर से भी धार्मिक नवजागरण की आवाज दबे स्वर में ही सही पर आने लगी है। एक ऐसी पाकिस्तानी लड़की जिसका जन्म ब्रिटेन में हुआ है जो अपनी शादी को लेकर असमंजस में है और वह इस सवाल से जूझ रही है, वह कहती है मैं जानना चाहती हूं कि क्या चचेरे भाई से शादी करनी चाहिए और क्या रिश्ते में भाई-बहनों के बीच शादी एक सही फैसला होता है? इनमें मेरे दादा-दादी भी शामिल हैं लेकिन अगर मैं ऐसा करने से इन्कार कर दूं तो क्या यह मेरा पागलपन होगा या मुझे इस परम्परा से छुटकारा पा लेना चाहिए?

दरअसल हिबा नाम की यह 18 साल की ब्रितानी पाकिस्तानी लड़की इस्लामिक परम्पराओं पर सवाल ही नहीं खड़े कर रही बल्कि इन परम्पराओं की तह तक जाने की कोशिश भी कर रही है। लेकिन एक रुढ़िवादी समाज में क्या उसके जवाब सही से मिल पाएंगे? इस सवाल का जवाब खोजते वह अपने घरवालों से लेकर पाकिस्तान जाकर अपने उन चचेरे भाइयों से मुलाकात की जिनसे उसकी शादी हो सकती थी। धार्मिक से लेकर वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कजन-मैरिज के सही-गलत होने की पड़ताल भी की। हिबा लिखती है कि मैंने इस मुद्दे पर सबसे पहले अपनी उम्र के युवा भाई-बहनों से बात की लेकिन कोई भी कैमरे पर आकर बात नहीं करना चाहता था। मैंने इस बारे में अपनी मां, पिता और अपने अंकल से बात की। अंकल ने बताया कि एशिया में शादी सिर्फ दो लोगों के बीच नहीं, परिवारों के बीच भी होती है, बेहतर होता है जब दोनों परिवार मूल्यों को साझा करते हैं इसलिए ऐसी शादियां किसी बाहरी शख्स से शादी करने से बेहतर होता है। मेरे अंकल ने इसे इतने खूबसूरत अंदाज में समझाया है कि मुझे ऐसी शादियों के सफल होने की बात समझ में आने लगी है। उन्होंने मुझे मेरे परिवार में हुई ऐसी शादियों के बारे में बताया। इसके बाद मां ने भी उनके परिवार में हुई ऐसी शादियों के बारे में बताया। ऐसी शादियों का आंकड़ा काफी ज्यादा है बल्कि पाकिस्तान में तो 75 प्रतिशत शादियां भाई-बहनों के बीच हुई हैं।

इस सबकी पड़ताल के लिए हिबा पाकिस्तान आई उसने देखा कि लड़कों को ऐसी शादियों से एतराज नहीं था लेकिन लड़कियां जेनेटिक गड़बड़ियों का हवाला देते हुए इन्हें बेहतर नहीं बताती थीं। हीबा कहती है चचेरे भाई-बहनों में शादी से बच्चों के बीमार पैदा होने की बात मेरे लिए काफी डराने वाली थी। इसके बाद मैंने ब्रिटेन आकर एक ऐसे सम्बन्धी से मुलाकात की जिन्होंने अपनी चचेरी बहन से शादी की थी जिनके दो बच्चे ऑटिज्म के शिकार थे। फिर मैंने अपने मौलवी से जाकर इस बारे में बात की तो उन्होंने मुझे बताया कि कुरान में इसका जिक्र नहीं है और ये पारम्परिक चीज है। इसका धर्म से सम्बन्ध नहीं है।

हिबा कहती है कि उस परिवार से मिलना मेरे लिए एक दर्दभरा अनुभव था। इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। मैंने ब्रिटेन आकर एक रिसर्च देखी जिसमें साल 2007 से 2010 के बीच ब्रेडफोर्ड में पैदा होने वाले बच्चों में जन्मजात बीमारियों का जिक्र था। इस रिपोर्ट के मुताबिक इस दौरान 13, 500 बच्चे पैदा हुए जिनमें से तीन फीसदी बच्चे ब्रिटिश पाकिस्तानी थे। इनमें से 30 प्रतिशत बच्चे जेनेटिक बीमारी के साथ पैदा हुए। लेकिन मैंने इस सबके बाद अपनी मां से बात की तो पता चला कि उन्होंने अपने पहले चचेरे भाई के साथ शादी की थी लेकिन वह सिर्फ 18-20 महीने तक चली थी। मैं अपनी मां पर गर्व करती हूं कि वह उस शादी से बाहर आ गई क्योंकि पाकिस्तानी समुदाय में इसे ठीक नहीं समझा जाता है। इस सबके बाद मैंने तय किया है कि मैं किसी चचेरे भाई के साथ शादी को लेकर सहज महसूस नहीं करती हूं और मैं नहीं करूंगी।

हिबा की यह कहानी इसी माह बीबीसी पर प्रकाशित हुई थी जिसने मुस्लिम समाज की रुढ़िवादिता पर जमकर प्रहार किया। एक मुस्लिम लड़की के लिए यह देखना काफी खतरनाक था कि वह परम्परा को लेकर सवाल उठा रही है जोकि इस्लामी समाज में जायज नहीं समझा जाता। किन्तु उसने इस बात की चिंता नहीं कि और इस परम्परा को जो आज सीधे धर्म से जोड़कर देखी जाती है उसने इसे विज्ञान का आईना दिखाकर नकारा।

दरअसल विज्ञान और हमारे शास्त्रों का मत भिन्न नहीं है। वैदिक धर्म में एक ही गोत्र में शादी करना वर्जित है क्योंकि सदियों से ये मान्यता चली आ रही हैं कि एक ही गोत्र का लड़का और लड़की एक-दूसरे के भाई-बहन होते हैं और भाई बहन में शादी करना तो दूर इस बारे में सोचना भी पाप माना जाता है। इस कारण वैदिक धर्म एक ही गोत्र में शादी करने की इजाजत नहीं देता है। ऐसा माना जाता है कि एक ही कुल या एक ही गोत्र में शादी करने से इंसान को शादी के बाद कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं इस तरह की शादी से होनेवाले बच्चे में कई अवगुण भी आ जाते हैं। सिर्फ हमारे शास्त्र ही नहीं बल्कि विज्ञान भी इस तरह की शादियों को अमान्य करार देता है। वैज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो एक ही कुल या गोत्र में शादी करने से शादीशुदा दंपत्ति के बच्चों में जन्म से ही कोई न कोई आनुवांशिक दोष पैदा हो जाता है। एक ही गोत्र में शादी करने से जीन्स से संबंधित बीमारियां जैसे कलर ब्लाइंडनेस हो सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए शास्त्रों में समान गोत्र में शादी न करने की सलाह दी गई है।

वैदिक संस्कृति के अनुसार, एक ही गोत्र में विवाह करना वर्जित है क्योंकि एक ही गोत्र के होने के कारण स्त्री-पुरुष भाई और बहन हो जाते हैं। इस कारण पाकिस्तान की हिबा का फैसला वैचारिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक रूप से नवजागरण की दिशा में एक सही कदम है।

-राजीव चौधरी

धर्म के नाम पर मनोरंजन....धर्म का उपहास?

- प्रकाश आर्य

निरन्तर बढ़ती जा रही कांवड़ यात्रा और उसके परिणाम या उसके महत्व पर समाज को कभी चिन्तन भी करना चाहिए। बिना सोचे समझे किसी भी कार्य को करना उसके परिणाम की चिन्ता न करना उससे होने वाली हिंसा की चिन्ता न करना ऐसे कार्यों को योगीराज भगवान श्रीकृष्ण ने तामसी कर्म कहा है। गीता में उल्लेख करते हुए दर्शाया गया है-

अनुबन्ध ज्ञयं हिंसा मनवेक्ष्य च पौरुषम।
मोहादारभ्यते कर्मः यत् तत् तामसू मुच्यते।।

ईश्वर न मनुष्य को एक विशेष शक्ति प्रदान की है और वह है विशिष्ट ज्ञान। सामान्य ज्ञान खाना, पीना, सोना, सन्तानोत्पत्ति आदि तो प्रत्येक पशु पक्षी व प्राणी मात्र के पास जन्म से उन्हें प्राप्त है परन्तु जीवन का विकास, दोनों लोकों की प्राप्ति, संयमित व ज्ञान युक्त जीवन जीना तो केवल मानव को ही प्राप्त है। इसीलिए इसे संसार की समस्त योनियों में सर्वोत्तम योनि का स्थान मिला है।

चक्षुओं में प्रायः उचित अनुचित का तथा अपनी जाति के समूह से अलग सोचकर कुछ करने की क्षमता नहीं होती। कुछ भेड़ें आगे किसी मार्ग पर चल दें तो उसके पीछे हजारों की संख्या में अन्य भेड़ें चल देती हैं। किसी भेड़ को यह जानकारी नहीं होती है कि वे कहां जा रही हैं, क्यों जा रही हैं, कितनी देर तक और कितनी दूर तक चलना है? ऐसी कोई जानकारी उसे नहीं रहती। वह तो वह तो सामने चलने वाली भीड़ को देखकर ही कदम बढ़ाने लगती हैं। इसे भेड़चाल कहते हैं। आज क्या हो रहा है थोड़ा इस पर भी सोचें धर्म के नाम पर जिसने जो चला दिया उसको करोड़ों करोड़ों व्यक्ति उस पर चल देते हैं। जो कर रहे हैं। उसका क्या परिणाम होगा उससे कोई लाभ होगा या नहीं उससे कहीं कोई हानि तो नहीं होगी आदि किसी बात पर वे ध्यान नहीं देते। बस बहुत से लोग कर रहे हैं इसलिए वे भी कर रहे हैं। परन्तु क्षमा करना ऐसी मानसिकता मनुष्यता की पहचान नहीं, यह तो भेड़चाल है। मनुष्य तो वह है जो प्रत्येक कार्य को करने के पहले उस पर विचार करके सोच समझकर करे। इसलिए कहा गया-

ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः।

मनुष्य वही जो मनन चिन्तन करके कोई कार्य करता है। इसलिए बिना सोचे समझे परिणाम रहित मात्र दिखावे से हो रहा धर्म प्रचार और उसका अनुसरण धर्म के शुभ, सुखद परिणाम से सबको वंचित कर रहा है।

धर्म का परिणाम सुख, शान्ति धैर्यता, सत्यता, सौहार्दता, संगठन, प्रेम, अहिंसा, सद्भाव होता है। क्या आज धर्म से यह सब मिल रहा है? जबकि आज मोहल्ले, गली-गली, घर-घर में धर्म का प्रचार है बड़े-बड़े आयोजन हो रहे हैं, फिर ऐसा विपरीत असर क्यों?

.....धार्मिक भाव से कांवड़ यात्रा बहुत अच्छी बात है। किन्तु इसकी सार्थकता व महत्त्व के लिए जो यात्रा निकाली जाती है इसमें बहुत सुधार होना चाहिए। यात्रा के साथ कुछ कर्मकाण्डी विद्वान भी चलें, रास्ते में आने वाले ग्रामों अथवा शहरों में आध्यात्मिक कार्यक्रम करें, प्रतिदिन सुबह सायंकाल यज्ञ, भजन, कीर्तन और ज्ञानवर्धक उपदेश हों।.....

धर्म के चारों ओर प्रचार के बाद भी आज तो परिवार, समाज, राष्ट्र में अशान्ति, भय, दुःख, दूरियां, पतन, हिंसा क्यों बढ़ रहा है? क्याधर्म का परिणाम इस प्रकार की विकृति है? यदि धर्म के प्रचार-प्रसार से इस प्रकार की अव्यवस्था हो तो फिर धर्म को मानने से क्या लाभ, फिर तो ऐसे धर्म को न मानना ही ठीक होगा। परन्तु ऐसा नहीं, धर्म तो मानवता की आत्मा है बिना धर्म के तो मनुष्य को मनुष्य ही नहीं कहा गया है। इसलिए धर्म मानना तो प्रत्येक मनुष्य को मनुष्य कहलाने के लिए पहला गुण है। परन्तु धर्म वह है जो जीवन को उन्नति सद्ज्ञान, सद्कर्म के मार्ग पर ले जावे। जिसमें एक दूसरे के प्रति त्याग भाव हो। जो मात्र दिखावा न होकर आचरण में, हमारे व्यवहार में समाया हो। वहीं धर्म समाज व संसार को श्रेष्ठ सुखद स्थान पर ले जा सकता है। धर्म का कार्य श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना है। आज कांवड़ यात्रायें निकाली जा रही हैं। एक से एक बढ़कर कम्पटीशन हो रहा है, घर बार छोड़कर युवक,युवतियां, पुरुष, महिला और छोटे-छोटे किशोर इसमें सम्मिलित होते हैं। इसका मुख्य कार्य है एक स्थान से जल भरकर लाना और किसी दूसरे स्थान पर उसे छोड़ना है। इसी कर्म व भावना के अनुसार ईश्वर को सिर्फ पानी चढ़ाकर उसकी बड़ी भक्ति का कर लेना समझ लिया जाता है।

परन्तु थोड़ा विचार करें- परमात्मा को जल की आवश्यकता है क्या? दूसरा यह कि, जो जल आपने कहीं से भरा क्या वह आपका अपना बनाया हुआ है?

इसका उत्तर होगा नहीं, न तो परमात्मा को हमारे एक लोटे जल की आवश्यकता है और न ही जो जल हम चढ़ा रहे हैं वह हमारा अपना है। क्योंकि हम उसे जल क्या देंगे जिसने बड़े-बड़े समुद्र पृथ्वी पर और आकाश में बनाएं हैं बड़ी-बड़ी नदियां, तालाब और विशाल गगन चुंभी बर्फीले पहाड़ जिसने रचे हैं, बारिश का अथाह पानी जो हम सबको देता है। इसलिए जो दाता है सबको देता है उसे उस एक लोटे पानी की क्या जरूरत?

दूसरा यह कि जहां से पानी लाए वह भी उसी का दिया हुआ है। उसकी वस्तु उसी को भेंट करके उसे प्रसन्न करने का प्रयास अज्ञानता है। किसी के घर जाकर उसी की वस्तु घर से उठाकर उसे भेंट कर दें तो इससे वह खुश होगा या हमारी अज्ञानता पर हंसेगा?

परमात्मा को कोई भी भौतिक वस्तु की न तो आवश्यकता है और न ही उसने कभी ग्रहण की है। उसके नाम पर चढ़ावा करके हम ही उस वस्तु को प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लेते हैं। अरे, परमात्मा को देना है तो वह दो जो तुम्हारा है। परमात्मा को देने के लिए स्वच्छ हृदय, शुभ कर्म, शुभ विचार और उसकी कृपा के प्रति सदभाव हैं जो हमारे हाथ में हैं, इसके स्वामी हम हैं, यह चढ़ाकर उस परमात्मा को प्रसन्न कर सकते हैं।

धार्मिक भाव से यात्रा बहुत अच्छी बात है। किन्तु इसकी सार्थकता व महत्त्व के लिए जो यात्रा निकाली जाती है इसमें बहुत सुधार होना चाहिए। यात्रा के साथ कुछ कर्मकाण्डी विद्वान भी चलें, रास्ते में आने वाले ग्रामों अथवा शहरों में आध्यात्मिक कार्यक्रम करें, प्रतिदिन सुबह सायंकाल यज्ञ, भजन, कीर्तन और ज्ञान वर्धक उपदेश हों। यात्रा के मध्य व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति अच्छे उद्गार भरा वातावरण हो। दुर्गुण-दुर्व्यसनों को त्याग सद्गुण ग्रहण करने की प्रेरणा इसमें मिले। किसी प्रकार का नशा व अभक्ष पदार्थो का पूर्णतः सेवन निषेध हो।

जितने दिन कांवड़ यात्रा में रहे जीवन संयमित व आध्यात्मिक विचारोंसे पूर्ण हो। समाज व संस्कृति रक्षा व प्रगति का सन्देश घर-घर पहुंचाने की योजना बनें ताकि सनातन धर्म की अच्छाइयों को समाज समझे व उसके प्रति दृढ़ता हो। ऐसा कार्य कांवड़ यात्रा में करना सार्थक है समय, शक्ति, सम्पत्ति का सदुपयोग है।

किन्तु इसके स्थान पर केवल मनोरंजन, नशीले पदार्थों का सेवन, अनुशासनहीनता का प्रदर्शन और मात्र जगह-जगह लगे भोजन नाश्ते के कैम्पों का आनन्द लेने के लिए जो यात्राएं निकाली जावे वे सार्थक नहीं हैं। कई बार देखा गया है कि अनेक कांवड़िया गांजा, भांग और यहां तक कि शराब का सेवन करते हुए भी देखे गए। कुछ निठल्ले, बेरोजगार इसी बहाने कुछ दिन माजमस्ती में कट जायेंगे, यात्राओं मेंशामिल होते देखे गए। इन सबसे मनोरंजन या अपना पैसा खर्च कर सस्ती लोकप्रियता अथवा अहम की तुष्टि तो हो सकती है किन्तु युवा पीढ़ी का भटकाव समाज की सबसे बड़ी हानि है।

हमारे मुस्लिम सम्प्रदाय के उन व्यक्तियों से सीखना चाहिए जो यात्रा करते हैं पर अपना खर्च करके सादा जीवन व्यतीत करके इस्लाम का घर-घर में प्रचार करते हैं। इस्लाम के प्रति इस्लाम के अनुयायियों में कट्टरता आए। उनका ऐसा प्रयास उनके मजहब की दृष्टि से सार्थक है समय व शक्ति की बर्बादी नहीं है। उनसे सीखकर सत्य सनातन धर्म के लाभार्थ कुछ यदि हो सके तो ऐसी कावड़ यात्रा को निकालना सार्थक होगा।

- सभा मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक समाचार

श्रीमती राजरानी घई जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामंत्री श्री प्राणनाथ घई जी की धर्मपत्नी श्रीमती राजरानी घई जी का 14 जुलाई 2017 में निधन हो गया। दिनांक 17 जुलाई 2017 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली सभा एवं विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्री दिलीप कुमार दिनकर जी को पितृशोक

आर्य समाज रजोकरी के संस्थापक श्री दिलीप कुमार दिनकर जी के पिता श्री योगेन्द्र सिंह का 5 जुलाई 2017 को निधन हो गया वे 84 वर्ष के थे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

बोध कथा

मायावाद और अध्यात्मवाद का उचित मिश्रण

उपनिषद् में एक कहानी आती है- एक पिता था, बहुत विद्वान् ब्राह्मण। उसका पुत्र भी विद्वान् था। एक दिन पिता ने पुत्र से पूछा- ''जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में अध्यात्मवाद और मायावाद दोनों को मिला दिया है, उसके लिए तू क्या कर सकता है?''

पुत्र ने विचारकर उत्तर दिया- ''उसके लिए मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं यदि चाहूं भी तो उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता, क्योंकि वह ठीक मार्ग पर चला जाता है। चाहूं तो भी उसका भला नहीं कर सकता, क्योंकि वह सबसे अधिक कल्याणकारी मार्ग है।''

पिता ने कहा-''तुम भूलते हो पुत्र! जिन लोगों ने दोनों को मिला दिया है, वे भी भूल कर सकते हैं। अन्न और प्राण, मायावाद और आध्यात्म, ये दो वस्तुएं है। यदि कोई व्यक्ति इन दोनों के मिलने के पश्चात् भी इनकी ओर अधिक चल पड़ा है तो उसे तेरी रक्षा की आवश्यकता है। जा उसके पास, उसे बचाने का प्रयत्न कर! वह ठीक मार्ग से भटक गया है।''

तब ठीक मार्ग क्या है? यह कि अन्न और प्राण, मायावाद और अध्यात्मवाद, दोनों को न केवल मिलाकर मनुष्य आगे बढ़े, अपितु ठीक ढंग से मिलाकर आगे बढ़े।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन माण्डले (म्यांमा) : 6-7-8 अक्तूबर, 2017

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक भारतीय आर्यजनों के लिए यात्रा विवरण

सम्माननीय आर्य बन्धुओ!

25 जुलाई 2017

सादर नमस्ते। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017 को म्यांमार (बर्मा) के माण्डले शहर में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि भी बर्मा पहुंचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु काफी आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वी त सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, बर्मा द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

माण्डले में ब्रिटिश शासनकाल में यहां किलानुमा जेल थी जहां भारत माता के अनेक वीर सपूतों को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस समेत कई क्रान्तिकारी यहां एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियां काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हुकूमत नहीं चाहती थी।

माण्डले का मौसम लगभग भारत जैसा ही है। सर्दियों में कड़ी, सर्दी, गर्मियों में आकाश से लेकर धरती तक भट्टी की तरह तपाती गरमी तो बरसात में भारी वर्षा भी यहां होती है। मंदिरों, प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य से भरपूर यह शहर अपनी अनेक विशेषताओं के कारण भी जाना जाता है। यहां दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में एक मंदिर विद्यमान है यानी कि किताब के हर पृष्ठ के रूप में एक मंदिर बना है जिनकी संख्या करीब 500 से ज्यादा है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ब्रह्मदेश यानी बर्मा में 120 वर्ष के लम्बे अंतराल के पश्चात् यह आर्य महासम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। अनेकों आर्यजन इस अवसर पर बर्मा के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बर्मा के कुछ रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। यात्रा की जानकारी निम्न प्रकार है-

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं. 1 : 2 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2017

दिल्ली से : (7 रात्रि 8 दिन) **कोलकता से : (8 रात्रि 9 दिन)**

कार्यक्रम

02.10.2017 दिल्ली से जाने वाले यात्री रात्रि को हवाई जहाज द्वारा बैंकाक होते हुए 3 अक्टूबर को सुबह रंगून पहुंचेंगे। कोलकता से जाने वाले यात्री 2 अक्टूबर की सुबह ढाका होते हुए उसी दिन शाम को रंगून पहुंचेंगे और रात्रि विश्राम रंगून में करेंगे।

03.10.2017 इस दिन दिल्ली से तथा कोलकता से आने वाले सभी यात्री रंगून की सैर करेंगे तथा रात्रि विश्राम होटल में करेंगे।

04.10.2017 सुबह इनले लेक के लिये हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान, इनले लेक का भ्रमण, रात्रि विश्राम इनले लेक में।
(पानी के अन्दर बसे हुए शहर को देखने के लिये इनले लेक पूरे विश्व में विख्यात है)

05.10.2017 इनले लेक से मांडले के लिये ए.सी. लक्जरी कोचों द्वारा प्रस्थान, शाम को मांडले भ्रमण, रात्रि विश्राम मांडले में।

06.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

07.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

08.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

09.10.2017 दिल्ली जाने वाले यात्री मांडले से सुबह दिल्ली के लिये बैंकाक होते हुए प्रस्थान करेंगे तथा कोलकता जाने वाले यात्री मांडले से रंगून तथा ढाका होते हुए कोलकता पहुंचेंगे। दिल्ली वाले यात्री उसी दिन रात्रि को लगभग 11 बजे दिल्ली वापस पहुंचेंगे और कोलकता वाले यात्री रात्रि को उसी दिन लगभग 8 बजे कोलकता पहुंचेंगे।

यात्रा व्यय

दिल्ली से जाने वाले यात्रियों के लिये **रु. 78500/- प्रति व्यक्ति**

कोलकता से जाने वाले यात्रियों के लिये **रु. 65500/- प्रति व्यक्ति**

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 6/7 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा वीजा आदि शामिल हैं।

उक्त यात्रा हेतु दिल्ली से केवल 75 सीटों का आरक्षण करवाया गया है तथा कोलकता से केवल 25 सीटों का आरक्षण करवाया गया है। कृपया ध्यान रखें कि इन सीटों की पूर्ति होने के पश्चात् उक्त यात्रा-दर में वृद्धि हो सकती है इसलिये शीघ्र से शीघ्र अपनी सीट बुक करा लें।

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं. 2 : 30 सितम्बर से 9 अक्टूबर 2017
(केवल दिल्ली से जाने वाले यात्रियों के लिये - 9 रात्रि 10 दिन)

कार्यक्रम

30.09.2017 रात्रि को दिल्ली से क्वालालम्पुर (मलेशिया) के लिये हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान

01.10.2017 सुबह क्वालालम्पुर आगमन, दिन में सिटी टूर, रात्रि विश्राम क्वलालम्पुर

02.10.2017 पूरे दिन क्वालालम्पुर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, रात्रि विश्राम क्वालालम्पुर में

03.10.2017 सुबह हवाई जहाज से रंगून आगमन, दिन में रंगून की सैर, रात्रि विश्राम रंगून में

04.10.2017 सुबह इनले लेक के लिये हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान, इनले लेक का भ्रमण, रात्रि विश्राम इनले लेक में

05.10.2017 इनले लेक से मांडले के लिए ए.सी. लक्जरी कोचों द्वारा प्रस्थान, शाम को मांडले भ्रमण, रात्रि विश्राम मांडले में

06.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

07.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

08.10.2017 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले)

09.10.2017 मांडले से हवाई जहाज द्वारा सुबह रंगून तथा क्वालालम्पुर होते हुए दिल्ली के लिये प्रस्थान (दिल्ली आगमन रात्रि को)

यात्रा व्यय : रु. 99500/- प्रति व्यक्ति

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 8 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, क्वालालम्पुर, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा दोनों देशों के वीजा आदि शामिल है।

इस यात्रा दर केवल प्रथम 25 यात्रियों के लिये है। उसके पश्चात् यात्रा दर में वृद्धि हो सकती है। इसलिये शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक करा लें।

नोट :- (1) एअरलाइन्स का निश्चय हो जाने के पश्चात् आपको समय आदि की सूचना आपके मोबाइल अथवा ई.मेल पर भेज दी जायेगी। यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में **THOMAS COOK (I) Ltd** के नाम बैंक ड्राफ्ट **(Payable at Ahmedabad)** द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:-

श्री प्रकाश आर्य जी, मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(2) बैंक ड्राफ्ट के अतिरिक्त निम्नलिखित सामान भी साथ भेजें : -

(A) स्वयं का पासपोर्ट जिसकी वैधता (Validity) 05-04-2018 तक हो।

(B) Visa Application Form की 3 प्रति (तीनों पर अलग-अलग हस्ताक्षर करके)

(C) चार कलर फोटोग्राफ 35x45mm साइज के (वाहट बैंक ग्राउन्ड के साथ)।

(D) दो कोरे लैटर हैड (स्टाम्प व हस्ताक्षर सहित)

(E) यदि आप स्वयं रोजगार करते हैं तो कम्पनी के रजिस्ट्रेशन के जैरोक्स कापी तथा पार्टनरशिप डीड की जैरोक्स कॉपी भेजनी है, यदि आपकी कम्पनी प्रा. लि. है तो Memorandum of Article की जैरोक्स कॉपी भेजनी है।

यात्रा नं. 2 के लिए : उपरोक्त नोट में नं. 2 में से (B) , (D) , (E) डॉक्यूमैंट छोड़कर शेष उपरोक्त सभी सामान भेजना अनिवार्य है।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

(1) आर्य-सन्देश में प्रकाशित यात्रा विवरण के आधार पर जो यात्री रु. 15000/- की राशि भेज चुके हैं वे शेष राशि THOMAS COOK(I) Ltd. के नाम ड्राफ्ट बनवाकर दिल्ली के पते पर भेजने का कष्ट करें।

(2) यात्रा नं. 1 के लिये दिल्ली से केवल 75 सीटें बुक कराई गई हैं और कोलकता से केवल 25 सीटें ही बुक करवाई गई हैं। इन सीटों के आरक्षित हो जाने के बाद, इस यात्रा में शामिल होने वाले यात्रियों को अधिक यात्रा व्यय देना पड़ सकता है। अत: शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक कराने का प्रयास करें।

शेष विवरण एवं आवेदन पत्र का प्रारुप पृष्ठ 7 पर दिया गया है।

जन्मदिवस (23 जुलाई) पर विशेष

आजाद, आजाद है वह अंग्रेजों की नहीं! अपनी ही गोली से मरेगा

.....वह यज्ञापवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहां डरने वाला था? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंत पड़ने लगे, पर उस बालक के मुख से आह तक न निकली। वह वीर बालक प्रत्येक बेंत के आघात पर बस यही उद्घोष करता रहा ''वन्दे मातरम्।'' ''भारत माता की जय'' उस वीर-धीर बालक का नाम था 'चन्द्रशेखर'। इसी लोमहर्षक अति भयंकर घटना के बाद तो बालक का वही नाम जो उसने अदालत को बतलाया था, उपनाम उसका बना और कालांतर में यही 'आजाद' उपनाम, सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया। बालक चन्द्रशेखर विदेशी अत्याचारी अंग्रेजों के साम्राज्य को देश से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पना ही कर बैठा था। दिन-रात वह यही सोचा करता था। कि कैसे इन अंग्रेजों को यहां से खदेड़ा जाये!.....

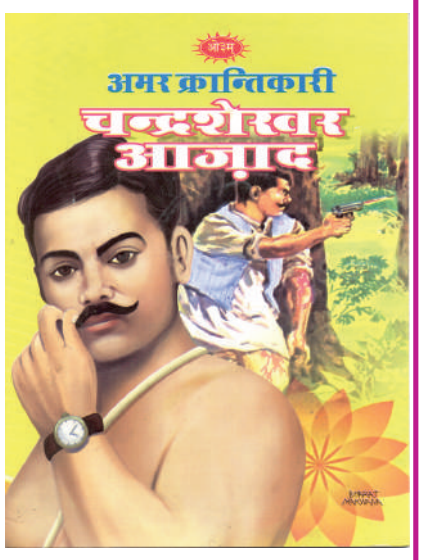

वसुमति वसुन्धरा धरती माता आदि काल से ही अनेक नररत्नों का अपने गर्भ में रखती चली आयी है, इसीलिए इस बारे मे संस्कृत साहित्य में लिख है-

दाने तपसि शौर्य च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।।

दान में, तपस्या में, शौर्य में, विज्ञान में, विनम्रता में और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह वसुन्धरा एक नहीं, अनेक-अनके अनर्घ नररत्नों को धारण करने वाली है। सन् 1921 के ये वे दिन थे जब पूरे देश में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर सी दौड़ रही थी। देश की तरुणाई भी लुटेरे जालिम अंग्रेजों को सात समुद्र पार खदेड़कर स्वाधीन होने के लिए मचल रही थी।

बनारस के गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज पर भी कुछ देशभक्त युवक जब धरना दे रहे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हीं में से एक छोटे से बालक को नारे लगाते देख पुलिस वालों का खून खौल उठा। एक पुलिस वाले ने तमाचा मारते हुए उसे हथकड़ी भी पहना दी। पुलिस उसे घसीटती हुई कोर्ट ले गई। आखिर उसे कोर्ट में अंग्रेज जज के सामने पेश किया गया और मात्र ''भारत माता की जय'' बोलने के अपराध में जज ने उसे कोड़ों की भयंकर सजा सुना दी।

कोड़े खाकर उसी समय अहिंसा का वह वीर सिपाही आग का गोला बनकर धधक उठा। उसने वहीं भरी अदालत में यह प्रतिज्ञा की कि जब तक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दूंगा तब तक कभी चैन से नहीं बैठूंगा। तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे पिता का नाम क्या है? तुम्हारा निवास स्थान कहां है? ये तीन प्रश्न भी उसी चौदह वर्षीय बालक से बड़े ही रौबीले स्वर में जब मजिस्ट्रेट ने पूछे तो उसने उत्तर में जो कहा वह बोला ''अदालत सुने और कान खोलकर सुने मेरा नाम है 'आजाद' 'आजाद' 'आजाद' मेरे पिता है का नाम है 'स्वाधीन', 'स्वाधीन', 'स्वाधीन' और मेरा निवास स्थान है 'जेलखाना या कहना चाहिए 'कारागार' कारागार, कारागार।

उस अल्पायु बालक के इन उत्तरों को ज्यों ही सुना अदालत ने दांतों तले अंगुली दबा ली फिर वह धधक भी उठी और जलकर भस्म ही होने का थी कि उसने आज्ञा दी - इस दीवाने को पन्द्रह बेंते और लगाई जायें। पर इससे भी वह यज्ञापवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहां डरने वाला था? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंत पड़ने लगे, पर उस बालक के मुख से आह तक न निकली। वह वीर बालक प्रत्येक बेंत के आघात पर बस यही उद्घोष करता रहा ''वन्दे मातरम्।'' ''भारत माता की जय'' उस वीर-धीर बालक का नाम था 'चन्द्रशेखर'। इसी लोमहर्षक अति भयंकर घटना के बाद तो बालक का वही नाम जो उसने अदालत को बतलाया था, उपनाम उसका बना और कालांतर में यही 'आजाद' उपनाम, सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

उन 15 बेंतों के प्रत्येक आघात ने चन्द्रशेखर के बालहृदय को अंग्रेजों के प्रति घृणा से ही भर दिया था। बालक चन्द्रशेखर विदेशी अत्याचारी अंग्रेजों के साम्राज्य को देश से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पना ही कर बैठा था। दिन-रात वह यही सोचा करता था। कि कैसे इन अंग्रेजों को यहां से खदेड़ा जाये!

फरार होकर आजाद उस बम पार्टी में सम्मिलित हो गये जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भारत में उस समय अच्छी तरह से काम कर रही थी, जो देश से अंग्रेजी शासन को सशस्त्र क्रांति के बल पर उखाड़ फेंकना चाहती थी। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्लउ खां, सचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे नौजवान इसी दल के ही सदस्य थे जो सिर से कफन बांधकर अंग्रेजी सरकार को निकालने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। यह दल वही था जो बमों, पिस्तौलों और बन्दूकों से पराधीनता के जुए को उतार फेंकना चाहता था। सशस्त्र क्रांति के आयोजन के लिए दल को भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी ही। उस समय के पूंजीपति जितने भी थे, वे सब ही हृदय से अंग्रेजों के ही भक्त थे, इसीलिए क्रांतिकारियों को उनसे धन की सहायता मिल ही नहीं पा रही थी। अन्ततः लाचार होकर क्रांतिकारियों को डाका डालकर धन प्राप्त करने का मार्ग ही अपनाना पड़ा। क्रांतिकारियों ने शाहजहांपुर के पास काकोरी रेलवे स्टेशन के निकट ट्रेन रोकर सरकारी खजाने को ज्यों ही लूटा, अंग्रेजी सरकार दहल गयी। भय से कांप उठी। अंग्रेजी सरकार ने इस ऐतिहासिक ट्रेन डकैती काण्ड के प्रायः सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद हाथ न आ सके थे, क्योंकि उनकी तो प्रतिज्ञा ही यह थी ''फिरंगी मुझे जिन्दा न पकड़ सकेंगे।''

सन् 1929 में वाइसराय की गाड़ी पर बम फेंकने की योजना में भी आजाद की भूमिका प्रधान रूप में थी। इतना ही नहीं, असेम्बली भवन मे बम फेंकने की योजना भी आजाद द्वारा ही रची गयी थी। भगत सिंह और सुखदेव को जेल से छुड़ाने की योजना भी आजाद ने रची परन्तु देश का दुर्भाग्य या अंग्रेजों का सौभाग्य कहिए असमय में ही वह योजना असफल हो गई। इसके बाद तो फिर जो होना था वही हुआ। जब दीपक ही घर को फूंकने लगे कैसे किस्मत फूट न जाये। दल के ही कुछ कायरों के कारण राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला जैसों को फांसी पर चढ़ना पड़ा। देश के वे दीवाने हंसते-हंसते फांसी के झूलों पर झूल गये और फिर व 27 फरवरी सन् 1931 का दुर्भाग्यपूर्ण दिन जब दस बजे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में मां भारतीय के सपूत वीर आजाद को पुलिस ने चारों तरफ से घेर लिया। उस समय आजाद राम नाम का तहमद बांधे नंगे बदन थे और उनकी कटि में पिस्तौल बंधी हुई थी। जब असंख्य पुलिस उनके सामने बन्दूक और पिस्तौल तानकर गोलियां चलाने लगी तो आजाद ने भी अपनी कमर से पिस्तौल निकाला और एक पेड़ की आड़ लेकर गोलियों के जवाब में गोलियां चलाने लगे। उनके माउजर पिस्तौल में केवल बारह गोलियां ही थीं। पर उनकी एक-एक गोली का निशाना इतना सही था कि यदि पुलिस पेड़ों की आड़ में न होती तो आजाद की बारह गोलियों से सैकड़ों की पंक्ति मौत के घाट वहां उतर जाती। पर जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक ही गोली शेष रह गई तो उन्होंने कहा' आजाद आजाद है, वह अंग्रेजों की गोली से नहीं अपनी ही गोली से मरेगा और फिर अपने मस्तक में अपनी ही गोली मारकर भारत माता का वह सपूत चिर निद्रा में सो गया।

आजाद देश में आजाद जैसे शहीदों के ईंट पत्थरों के ताजमहल चाहे न हों पर इतिहास का यह अमर शहीद जिसके नाम से ही तत्कालीन सरकार कांपती थी, अपने वीरता पूर्ण कार्यों से युग-युग में अमर रहेगा। ''**कीर्तिर्यस्य सः जीवति**'' जिसका यश अमर है वह सदा जीवित रहता है। वीर ही नहीं विप्रवीर आजाद इसीलिए सदा जीवित रहेंगे क्योकि उन्होंने अपने पराक्रमी अनुपम जीवन से अथर्ववेद के इस मंत्र को भी व्यावहारिकता के धरातल पर पूर्ण रूप से सार्थक कर दिखाया - **अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्। अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।।** अथर्व. 12/1/54।

राष्ट्र-भूमि पर मैं साहसी हूं, भूमि पर मैं उत्कृष्ट भी हुं। दुश्मन से मुकाबला पड़ने पर उसके छक्के छुड़ा देनेवाला भी हूं। मुझमें सब ही शत्रुओं को परास्त कर डालने की असीम शक्ति है-प्रत्येक दिशा में। जैसी वीरता इस वेदमंत्र में वर्णित है वैसी ही वीरता आजाद के व्यक्तित्व में थी। उनमें ऐसी वीरता इसीलिए थी क्योंकि वे भारत की उसी बलिदानी मिट्टी में उत्पन्न हुए थे जिसमें विदेशी विधर्मी मुगल साम्राज्य से लोहा लेने वाले राणा प्रताप, वीर शिवाजी, वन्दा वैरागी और गुरु गोविन्द सिंह जैसे वीर उत्पन्न हुए थे।

-प्रियवीर हेमाइना

Veda Prarthana

Dear God May We Succeed in Making You Our Friend and Protetor

- Acharya Gyaneshwarya

तमित् सखित्वं ईमहे तं राये तं सुवीर्ये।
स शक्र उत नः शकदिन्क्रो वसु दयमानः।।

Tamit sakhitvam eemahe tam raye tam suvirye. Sa shakra ut nah shakadindro vasudayamanah.

(Rig Veda 1:10:6)

Eemaha tam it we pray to God for His only, sakhitvam friendship, guidance and benevolence tam raye we pray to Him for spiritual and physical wealth in our life, tam suvirye we desire Him for bravery, strength and inspiration. Sa shakra He is Omnipotent with the Greatest Abilities nah ut shakad He also gives us strength, and helps us acquire many abilities indro You are the Universal Benefactor vasu dayamanah. You are the Giver, please give us (make us home of) knowledge, strength and wealth.

Dear God we pray to You so that we become close to You and be constantly aware of Your presence as our most intimate Friend and Well-wisher. Dear God You are Omnipresent and spread everywhere like space. You are the Supreme Light of Knowledge that enlightens everybody like the sun lights up the whole world. You are without shape or form like the air. You are the Creator as well as maintainer and sustainer of the universe. At the beginning of mankind You give us knbowledge through the Vedas so we may follow a virtuous path in life. Dear God, You are also present in our soul and mind and as the inner voice to our soul You are constantly inspiring us to follow the correct path and to do the right thing. The inner joy, inspiration, fearlessness and bravery that we feel when we do the right thing comes from God. When we follow the right path, despite pressures and temptations to do otherwise, we will hear God's voice (our inner voice) speak to us and inspire us. Also, when we think evil thoughts or plan to do something wrong (lying, stealing, hate etc.) God creates doubt, fear, shame or an aversion in us toward such thoughts and behavior advising us to change our course towards the right path. God knbows even what goes on in our mind and is a witness to all our deeds at the level of thought, word and action. In this manner God the Supreme Being who resides inside every soul, is everybody's most intimate Friend, who looks afte each and everyone's welfare and showers His Grace upon everyone all the time.

The principal name of God is Om and as stated above He alone is our Supreme Friend, Well-wisher and Give of bliss. He is the Provider of virtuous knowledge, strength, courage, bravery, wealth and a resolute mind to utilize our abilities for virtuous causes, but to receive all such gifts, we must become deserving friends of God and make utmost effort to live virtuously by following God's teachings as described in the Vedas. God is karmphaldata and gives us just rewards (or punishments), exactly what we deserve, neither more nor less.

God has no shaper or form, yet God is Omnipresent and permeates each and every place in the universe, and also being Omnipotent God creates the whole unverse including various galaxies, stars and planets. He does not need others help to create the universe. God is the storehouse of strength. Those persons who truly honor the Infinite and Perplexing God who has Innumerable Abilities, and worship (eeshwar-stuti-prarthanaupasana) Him alone, God in turn provides such a true devotee with wonderful abilities so that the person's charcter, actions/ deeds and personal attributes become uniquely gifted. The person becomes enlightened, deeply virtuous, generous, acquires great will power and inner strength, and with these abilities starts to tackle issues such as honesty, integrity, caring for others, justice and fairnessss at local, societal, national and international level. He/ she starts to uproott pessimism and starts to achieve success in endeavors which promote truth, honesty, justice, transparency, and benevolence for all; goals which had appeared impossible to accomplish in the past.

Next God is addressed as Indra because He is the Universal Benefector and gives to virtuous and deserving persons inner treasures such as peace, happiness, contentment, fulfillment as well as external treasures such as wealth. Persons who sincerely and corretly worship God by incorporating God's teachings into the fabric of their life rather than merely go through rituals suggested by preachers of various religions, God gives them great wisdom, will power and physical strength. Because of these God given treasures and gifts, such persons develop inner resolve to improve the morality of their society and nation. Moreover, such persons because of their wisdom, determination, courage, sustained effort, generosity, selflessness and ability to work together with other persons with similar values succeed in their efforts to improve society.

Therefore, Dear God we pray to You with deep reverence to make us Your close friend, to be our leader and guide in life's journey, and in return we make a deep commitment to follow Your teachings alone. With Your friendship and inspiration we will first conquer our internal enemies i.e. vices such as lying, dishonesty, jealousy, greed, anger, blind attachments to things, and vanity. Next we will make our utmost effort to instill similar values in our family members, friends and our comunity. Last of all united together, we will fight and conquer external enemies e.g. those persons and rulers who support and sustain injustice, corruption, gross inequality, poverty, hunger etc. in the society. Thus, we will establish virtuous values of truth, honesty, caring, and respect for others all over the world. All of us in the world have only one race, 'human', and will develop brotherly or sisterly love for others only if we share common good, happiness, justice, equality and freedom. Dear God, please fill up our mind and intellect with such strength and determination that we succeed in our goals. Without Your help and grace we human beings are incapable of achieving much in life. We have full trust in You that You will listen to our prayer and help us succeed.

(For God's attributes, also see mantras# 1,2,5,10,20,28,30,31)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 27 **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

ह्रस्व मात्रा का चिह्न ' ।' यह है और दीर्घ का '=' है। जैसे 'सत्याग्रह' शब्द में कितनी मात्राएँ हैं, इसे हम इस प्रकार समझेंगे: = = । । सत्याग्रह = 6

इस प्रकार हमें पता चल गया कि इस शब्द में छह मात्राएँ हैं। स्वरहीन व्यंजनों की पृथक् मात्रा नहीं गिनी जाती।

स्वर या वर्ण : ह्रस्व मात्रा वाला वर्ण लघु और दीर्घ मात्रा वाला वर्ण गुरु कहलाता है। यहाँ भी 'सत्याग्रह' वाला नियम समझ लेना चाहिए।

चरण अथवा पाद: 'पाद' का अर्थ है चतुर्थांश, और 'चरण' उसका पर्यायवाची शब्द है। प्रत्येक छन्द के प्राय: चार चरण या पाद होते हैं।

सम और विषमपाद: पहला और तीसरा चरण विषमपाद कहलाते हैं और दूसरा तथा चौथा चरण समपाद कहलाता है। सम छन्दों में सभी चरणों की मात्राएँ या वर्ण बराबर और एक क्रम में होती हैं और विषम छन्दों में विषम चरणों की मात्राओं या वर्णों की संख्या और क्रम भिन्न तथा सम चरणों की भिन्न होती हैं।

यति: - हम किसी पद्य को गाते हुए जिस स्थान पर रुकते हैं, उसे यति या विराम कहते हैं। प्राय: प्रत्येक छन्द के पाद के अन्त में तो यति होती ही है, बीच बीच में भी उसका स्थान निश्चित होता है। प्रत्येक छन्द की यति भिन्न भिन्न मात्राओं या वर्णों के बाद प्राय: होती है।

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

वे सूचना मिलते ही पहुंच जाते थे

आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी के नेताओं तथा विद्वानों में श्री पण्डित सीतारामजी शास्त्री कविरंजन रावलपिण्डी का नाम उल्लेखनीय है। आप पण्डित गुरुदत्तजी विद्यार्थी के साथी-संगियों में से एक थे। अष्टाध्यायी के बड़े पण्डित थे। आपने वर्षो आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में कार्य किया। फिर स्वतन्त्र धन्धा करने का विचार आया तो कलकत्ता चले गये। वहाँ भारत प्रसिद्ध वैद्य कविराज विजय रत्नसेन के चरणों में बैठकर कविरंजन की उपाधि प्राप्त करके पहले अमृतसर फिर रावलपिण्डी में औषधालय खोलकर बड़ा नाम कमाया।

आप वेद, शास्त्र, ब्राह्मणग्रन्थों के बड़े मर्मज्ञ विद्वान् थे। अष्टाध्यायी के बड़े प्रचारक थे। यदि कोई कहता कि अष्आध यायी का पढ़ना-पढ़ाना अति कठिन है तो उसकी पूरी बात सुनकर उसका ऐसा युक्तियुक्त उत्तर देते कि सुननेवाला सन्तुष्ट हो जाता।

कविराजजी की कृपा से ही डॉक्टर केशवदेवजी शास्त्री बन पाये। आपकी प्रेरणा से आर्यसमाज को और भी कई संस्कृतज्ञ प्राप्त हुए। आपने कलकत्ता में अध्ययन करते हुए, वहाँ भी आर्यसमाज की धूम मचा दी। आपका वहाँ ब्राह्मसमाज के पण्डितों से तथा नेताओं से गहरा सम्पर्क रहा।

एक समय ऐसा आया कि सारा ब्राह्मसमाज आर्यसमाज में मिलने की सोचने लगा फिर कोई विघ्न पड़ गया। ब्राह्मसमाजियों में आर्यसमाज में मिलीन होने का विचार पैदा हुआ तो इसका कारण मुख्यरूप से कविराज सीतारामजी के प्रयास थे। यह सारी कहानी हम कभी इतिहास प्रेमियों के सामने रक्खेंगे। सब तथ्य हमने एक लेख में पढ़े थे। वह लेख खोजकर फिर विस्तार से इस विषय पर लिखा जाएगा।

कविराज ने अपनी विद्वत्ता तथा अपनी वैद्यक से आर्यसमाज को बहुत लाभान्वित किया। उन दिनों आर्यसमाज में संस्कृतज्ञ बहुत कम थे। अमृतसर में यह देखा गया कि जब कभी किसी संस्कार में या किसी समारोह में कविराज को बुलाया गया तो आप एकदम सब कार्य छोड़कर अपनी आर्थिक हानि की चिन्ता न करते हुए वहाँ पहुँच जाते। बस उन्हें आर्यसमाज की सूचना मिलनी चाहिए। वे शरीर से स्वस्थ थे। जीवन बड़ा नियमबद्ध था। स्वाध्याय तथा सन्ध या में प्रसाद करने का प्रश्न ही न था।

वे मास्टर आत्माराम अमृतसरी के अभिन्न मित्र थे। वैसे शास्त्रीजी की मित्र-मण्डली बहुत बड़ी थी। उन्हें मित्र बनाने की कला आती थी।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

(3) यात्रा व्यय में 70 वर्ष तक की आयु के यात्रियों का बीमा शुल्क शामिल है। 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले यात्रियों को यात्रा की व्यय-राशि देनी होगी। ऐसे यात्री स्वयं भी अपना बीमा करा सकते हैं।

(4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय-राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठ की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। एअर लाइन की टिकिट के लिये इसकी आवश्यकता रहती है।

(5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है।

(6) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 4 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री प्रकाश आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य (1) श्री एस.पी. सिंह, दिल्ली (2) श्री अरुण प्रकाश वर्मा, दिल्ली तथा (3) श्री शिव कुमार मदान दिल्ली हैं। श्री एस.पी. सिंह इस यात्रा के मुख्य सम्पर्क सूत्र रहेंगे। इन सभी के मोबाइल नम्बर नीचे दिये गये हैं।

(7) सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को यात्रा के कार्यक्रम में परिस्थितिवश फेरफार करने का पूर्ण अधिकार होगा।

(8) याद रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता 05/04/2018 तक होनी आवश्यक है।

(9) इमीग्रेशन में दिखाने हेतु अपना क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड अवश्य साथ रखें।

(10) अपने साथ न्यूनतम 500 US डालर प्रति यात्री अवश्य ले चलें।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे :

(1) 20 अगस्त 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल कराने पर 50% कटौती की जायेगी।

(2) 5 सितम्बर 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल करने पर 100% कटौती की जायेगी।

(3) यात्रा प्रस्थान की तारीख से 25 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर रु. 12000/- की कटौती होगी, 15 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर 50% कटौती होगी तथा 1 सप्ताह पूर्व वीजा न मिलने पर 75% कटौती होगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं -

1. श्री एस.पी. सिंह मो. 9540040324 (यात्रीगण सर्वप्रथम इनसे ही सम्पर्क करें)
2. श्री अरुण प्रकाश वर्मा मो. 9810086759 (श्री एस.पी. सिंह से सम्पर्क न होने ही इनसे सम्पर्क करें)
3. श्री शिव कुमार मदान मो. 9310474979 (श्री एस.पी. सिंह से सम्पर्क न होने पर ही इनसे सम्पर्क करें)

आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2017

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

भवदीय

(प्रकाश आर्य)

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, मो. 09826655117

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 हेतु आवेदन पत्र

श्री प्रकाश आर्य जी
मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेन म्यांमार - 2017 में भाग लेने जाना चाहता/चाहती हूं। इस सम्बन्ध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :.....पिता/पति का नाम : .....

आयु :.....जन्म तिथि: .....

व्यवसाय :.....

स्थाई पता : .....

.....

.....

.....

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : .....

ई.मेल :.....

मैं आर्य समाज .....का/की सदस्य हूं।

यात्रा नं. 1. दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 1 में दिल्ली से शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु. ...../- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटरहैड भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्राआरक्षित करक मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 1 कोलकता से

मैं यात्रा नं. 1 में कोलकता से शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु. ...../- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटर हैड भेज रहा हूं/रही हूं। पया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 2 केवल दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 2 में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रुपये ...../- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में पासपोर्ट के प्रथम तथा अन्तिम दो पृष्ठ की जैरोक्स भेज रहा हूं/रही हूं।

अपना पासपोर्ट, चार कलर फोटोग्राफ (35x45 mm) बर्मा के लिये, 4 कलर फोटोग्राफ (35x50mm) मलेशिया केग लिये, बर्मा का वीजा फॉर्म तथा दो कोरे लैटर हैड भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ)

भवदीय/भवदीया

दिनांक : ..... (आवेदक के हस्ताक्षर)

GOVERNMENT OF THE REPUBLIC OF THE UNION OF MYANMAR
MINISTRY OF IMMIGRATION AND POPULATION

DIRECTORATE OF IMMIGRATION AND NATIONAL REGISTRATION
IMMIGRATION DEPARTMENT
APPLICATION FOR ENTRY TOURIST VISA

PHOTO

1. Name in full (In Block Letters) _____
2. Father's Name in full _____
3. Nationality _____ 4. Sex _____
5. Date of birth _____ 6. Place of birth _____
7. Occupation _____
8. Personal description
   (a) Color of hair _____ (b) Height _____
   (c) Color of eyes _____ (d) Complexion _____
9. Passport
   (a) Number _____ (b) Date of issue _____
   (c) Place of issue _____ (d) Issuing authority _____
   (e) Date of expiry _____
10. Permanent address _____
11. Address in Myanmar _____
12. Purpose of entry into Myanmar _____
13. Attention for Applicants
    (a) Applicant shall abide by the Laws of the Republic of the Union of Myanmar and shall not interfere in the internal affairs of the Republic of the Union of Myanmar.
    (b) Legal actions will be taken against those who violate or contravene any provision of the existing laws, rules and regulations of the Republic of the Union of Myanmar.

I hereby declare that I fully understand the above mentioned conditions, that the particulars given above are true and correct and that I will not engage in any activities irrelevant to the purpose of entry stated herein.

Date _____ **Signature of Applicant**

(FOR OFFICIAL USE ONLY)

Visa No _____ Date _____
Visa Authority _____

Date _____
Place New Delhi, Republic of India

Embassy of the Republic of the Union of Myanmar, New Delhi

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 24 जुलाई, 2017 से रविवार 30 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27/28 जुलाई, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 जुलाई, 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

अपने-अपने पाले में वोट खीचतें नजर आयेंगे। अपनी पुरानी एक राष्ट्र एक ध्वज की दलील पर कायम रहते हुए भाजपा ने इसे राष्ट्रवाद का मुद्दा बनाया है। इस पर राज्य की कांग्रेस सरकार ने कोई फैसला नहीं लिया है। उनका कहना है कि भाजपा बेमतलब ही इस मुद्दे का विवाद बना रही है।

लेकिन प्रश्न किसी राजनैतिक दल के नेता द्वारा आलोचना या प्रशंसा का नहीं है। सवाल देश की अखंडता का है। अभी कुछ रोज पहले दक्षिण भारत से कुछेक लोगों द्वारा अलग देश द्रविड़नाडू की मांग भी उठाई गयी थी जिसमें उन्होंने कहा था यदि हमें बीफ खाने की इजाजत नहीं है तो हमें अलग देश दे दीजिये। इससे भी साफ पता चलता है कि बेवजह भारतीय समुदाय के अन्दर अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षा के लिए कुछ लोग नये-नये विवादों को भाषा, क्षेत्र, खान-पान से लेकर अलग ध्वज के नाम पर जन्म देने से बाज नहीं आ रहे हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि इस देश की विविधता के नाम पर एकता को खंडित किया जा रहा है।

हम सब जानते हैं कि जम्मू-कश्मीर को राज्य के संविधान की धारा 370 के तहत अलग झंडा रखने का अधिकार प्राप्त है। जम्मू-कश्मीर को धारा 370 में विशेष अधिकार देने से देश को कितनी क्षति हुई है, यहां उसे बताने की जरूरत नहीं है। यूएई दूतावास में सूचनाधिकारी रहे हैं विवेक शुक्ला कहते हैं कि अलग झंडा और संविधान देने के चलते ही वहां पर भारत से बाहर जाने की मानसिकता पैदा हुई। ये तो देश के जनमानस का संकल्प है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट अंग बना हुआ है पर वस्तुत: स्थिति यह है कि राज्य की जनता भारत से अपने को जोड़ कर नहीं देखती। उसका संघीय व्यवस्था में कतई विश्वास नहीं है। वह भारत के धर्मनिरपेक्ष संविधान को ठेंगा दिखाती है और कश्मीर घाटी में इस्लामिक शासन व्यवस्था लागू करना चाहती है।

संघीय ढांचे में रहकर राज्यों को अधिक स्वायत्तता प्राप्त हो इस सवाल पर कोई मतभेद नहीं हो सकते। यूं भी अब तमाम राज्य अपने यहां विदेशी निवेश खींचने के लिए प्रयास करते हैं। पहले यह नहीं होता था पर बदले दौर में हो रहा है। राज्यों के मुख्यमंत्री लंदन, सिंगापुर और न्यूयार्क के दौरों पर जाते हैं ताकि उनके यहां बड़ी कंपनियां निवेश करें पर ये सब प्रयास और प्रयत्न होते हैं एक भारतीय के रूप में ही। ये मुख्यमंत्री अपना अलग झंडा लेकर नहीं जाते विदेशों में; पर कर्नाटक सरकार तो उल्टी गंगा बहाना चाहती है। जाहिर है, देश कर्नाटक सरकार के फैसले को नहीं मानेगा। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार का यह फैसला कांग्रेस की बदहाल राजनीति को और बदहाल कर देगा, इसकी पूरी संभावना है। – ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

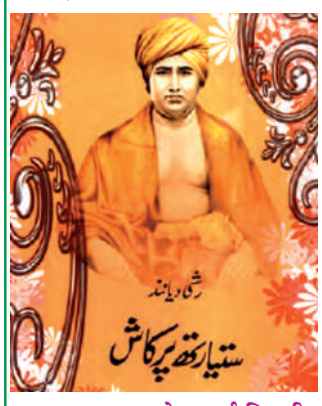

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य : 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 9540040339

जन्माष्टमी के अवसर पर वितरित करें

योगीराज श्रीकृष्ण का प्रेरक जीवन

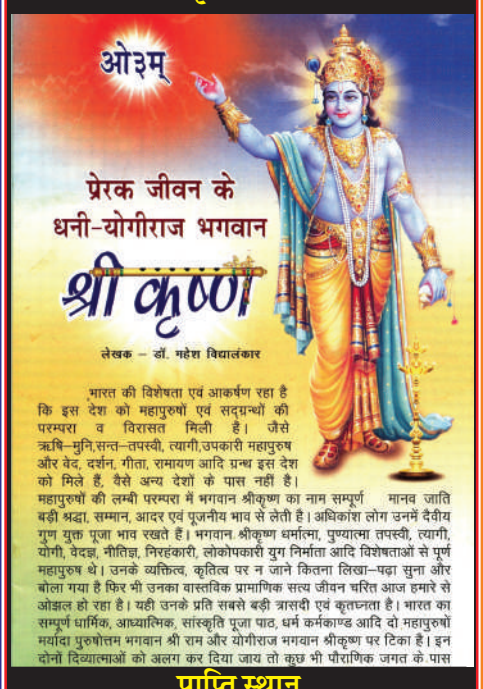

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह